शिवानी की नायिकाएं कभी हार नहीं मानती : प्रो. दिवा भट्ट

❑शिवानी ने अपने पात्रों के माध्यम से पहाड़ी जीवन व संस्कृति व पर्यावरण को प्रस्तुत किया है वह हिंदी साहित्य में अनूठा है : कुलपति प्रो.रावत

❑नैनीताल में हिंदी कथाकार शिवानी की जन्मशताब्दी के मौके पर हुई संगोष्ठी

आज समाचार सेवा

नैनीताल। शिवानी का जीवन और साहित्य दिखाते हैं कि देश में स्त्री स्वाधीनता की एक कितनी खामोश लड़ाई पिछली सदी में शुरू हो गई थी और जिन स्त्रियों ने अगली पीढ़ी के लिए बौद्धिक क्षेत्र में राह प्रशस्त की उन्होंने इस लड़ाई में निजी स्तर पर कितना कुछ चुपचाप सहा और झेला था। शिवानी की नायिकाएं तमाम तरह की समस्याओं से जूझते हुए निरंतर संघर्ष करती हैं मगर कभी हार नहीं मानती।

यह विचार वरिष्ठ साहित्यकार प्रो. दिवा भट्ट ने शुक्रवार को कुमाऊँ विश्वविद्यालय की महादेवी वर्मा सृजन पीठ तथा साहित्य अकादमी नई दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में हिंदी कथाकार शिवानी की जन्मशताब्दी के अवसर पर यूजीसी मालवीय मिशन टीचर्स ट्रेनिंग सेंटर (हरमिटेज भवन) में आयोजित शिवानी का कथा साहित्य : संवेदना और शिल्प विषयक एक दिवसीय संगोष्ठी में बतौर मुख्य वक्ता व्यक्त किए।

प्रो.भट्ट ने कहा कि शिवानी में हमको निरंतर बदल रहे पर पितृ सत्तात्मक मूल्यों के पक्षधर भारतीय समाज की घरेलू और कामकाजी औरतों के जीवन की अनकही सच्चाईयों का बेबाक दर्शन होता है। संगोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए कुमाऊँ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. दीवान सिंह रावत ने कहा कि आज हिंदी में पढने-लिखने की परंपरा को और अधिक सुदृढ़ करने की जरुरत है। पुस्तक लेखन में संख्या से अधिक गुणवत्ता को ध्यान में रखा जाना जरूरी है। बोले कि जो उत्कृष्ट लिखा जा रहा

है उसे प्रकाशित होकर जनमानस के बीच आना चाहिए। इस संबंध में जो भी संभव होगा उस दिशा में प्रयास किए जायेंगे। प्रो.रावत ने कहा कि शिवानी ने जिस तरह अपने पात्रों के माध्यम से पहाड़ी जीवन व संस्कृति और पर्यावरण को प्रस्तुत किया है वह हिंदी साहित्य में अनूठा है। उनका लेखन केवल कहानियाँ नहीं बल्कि एक सामाजिक दस्तावेज है जो हमें अपने आसपास की प्रकृति और समाज को समझने का एक नया दृष्टिकोण देता है।

इस मौके पर विषय प्रवर्तन करते हुए साहित्य अकादमी की सामान्य परिषद् के सदस्य प्रो. देव सिंह पोखरिया ने कहा कि लोकप्रियता की दृष्टि से शिवानी आज भी उतनी ही प्रासंगिक हैं जितनी अपने समय में थी। स्वाधीन भारत की समस्याएं विशेष रूप से स्त्री से सम्बन्धित समस्याएं उनकी रचनाओं में प्रमुखता से आई हैं। उनकी गहरी अंर्तसंवेदना नारी समाज के साथ थी। शिवानी की रचनाओं की तटस्थ ढंग से समीक्षा नहीं की गई। उनके रचना साहित्य के पुनर्मूल्यांकन की आवश्यकता है। स्वागत वक्तव्य साहित्य अकादमी के उपसचिव डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने दिया।

इससे पूर्व महादेवी वर्मा सृजन पीठ के निदेशक प्रो. शिरीष कुमार मौर्य द्वारा अतिथियों को पुष्पगुच्छ और स्मृति चिन्ह भेंटकर और शॉल ओढ़ाकर स्वागत किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलन और शिवानी जी के चित्र पर माल्यार्पण से हुआ। संगोष्ठी को सम्बोधित करते हुए साहित्यकार डॉ. रूपा सिंह ने कहा कि शिवानी बीसवीं सदी की सबसे लोकप्रिय हिंदी पत्रिका की कहानी लेखिकाओं में से थीं तथा भारतीय महिला आधारित उपन्यास लिखने में अग्रणी थीं। कथाकार रजनी गुप्त ने कहा कि कहानी के क्षेत्र में पाठकों और लेखकों की रूचि निर्मित करने तथा कहानी को केंद्रीय विधा के रूप में विकसित करने का श्रेय शिवानी को जाता है। उनके उपन्यास ऐसे हैं जिन्हें पढकर यह अहसास होता था कि वे खत्म ही न हों। उपन्यास का कोई भी अंश उसकी कहानी में पूरी तरह डुबो देता था। एसएसजे विश्वविद्यालय अल्मोड़ा के पूर्व कुलपति प्रो. जगत सिंह बिष्ट ने कहा कि वर्ण और धर्म से परे हटकर पात्रों की मानवीयता से साक्षात्कार शिवानी के भावबोध की विशिष्टता है। उनकी रचनाओं के विधर्मी पात्र भी उनकी पूरी सहानुभूति पाते हैं। शिवानी के लेखन की सफ्लता यह है कि वह न तो अपने चारों ओर के यथार्थ से घृणा करता है न भावुकता भरा प्रेम। वह जीवन को समग्रता में समझने की और उसे समझाने की कोशिश करता है।

संगोष्ठी को हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषा विभाग डीएसबी परिसर की अध्यक्ष प्रो.निर्मला ढैला बोरा सहित प्रो. चन्द्रकला रावत, डॉ. दिनेश कर्नाटक तथा डॉ. अनिल कार्की ने भी सम्बोधित किया। धन्यवाद महादेवी वर्मा सृजन पीठ के निदेशक प्रो. शिरीष कुमार मौर्य ने व्यक्त किया तथा संचालन पीठ समन्वयक मोहन सिंह रावत ने किया। इस अवसर पर प्रो. नीता बोरा शर्मा, प्रो. पदम सिंह बिष्ट, प्रो. एच.सी.एस. बिष्ट, प्रो. गिरीश रंजन तिवारी, प्रो. ललित तिवारी, डॉ. रितेश साह, डॉ. शुभा मटियानी, डॉ. शशि पाण्डे, मेधा नैलवाल, डॉ.दीक्षा मेहरा, डॉ. कंचन आर्या, डा. मथुरा इमलाल, डॉ. विवेकानंद पाठक, डॉ. भावना जोशी, एच.एस. राणा, ललित मोहन तथा हिमांशु विश्वकर्मा व बहादुर सिंह कुँवर आदि उपस्थित थे।